प्रातः क्लास 23-6-68 ओमशान्ति पिताश्री

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। समझाना उन्हों को होता है जिन्हों ने कुछ कम समझा है। समझा तो रहे हैं। कोई बहुत समझदार बनते हैं। बच्चे जानते हैं यह बाबा तो वन्डरफुल है। भल तुम यहां बैठे हो परन्तु अन्दर में समझते हो यह हमारा बेहद का बाबा भी है, बेहद का टीचर भी है, बेहद की शिक्षा देते हैं। सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं। स्टुडन्ट के बुधि में तो होना चाहिए ना। फिर हम साथ में भी जरूर ले जावेंगे। बाप जानते हैं यह पुरानी छी छी दुनिया है। इन से बच्चों को ले जाना है। कहां? घर। जैसे कन्या की शादी होती है तो सुसुर घर वाले आते हैं ना कन्या को अपने घर ले जाने। अभी तुम यहां बैठे हो, बाबा समझते हैं बच्चों को अन्दर में जरूर आता होगा कि हमारा बेहद का बाबा भी है, बेहद की शिक्षा भी देते हैं। बहुत बड़ी शिक्षा देते हैं। जितना बड़ा बाबा उतनी बड़ी बेहद की शिक्षा भी देते हैं। रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ भी बच्चों की बुधि में है। जानते हैं बाप इस छी2 दुनिया से हम सभी को वापस ले जाते हैं। यह भी अन्दर में याद करने से मन्मनाभव ही है। चलते-फिरते उठते-बैठते बुधि में यही याद रहे। वन्डरफुल चीज़ को याद करना होता है ना। तुम जानते हो अच्छी रीत पढ़ने से हम फिर से विश्व के मालिक बनते हैं। यह तो जरूर बुधि में चलना चाहिए। पहले बाप को याद करना पड़े। टीचर बाद में मिलता है। बच्चे जानते हैं हमारा बेहद का रूहानी बाप है। सहज याद दिलाने लिए बाबा युक्तियां बताते रहते हैं। मामेकं याद करो। जिस याद से ही आधा कल्प के विकर्म विनाश होंगे। पावन बनने लिए तुमने जन्म-जन्मान्तर भक्ति, जप-तप आद बहुत ही किये हैं। मंदिरों में जाते हैं, भक्ति करते हैं। समझते हैं हम परमपरा से करते आये हैं। शास्त्र कबसे बनी है। कहेंगे परमपरा से। मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं है। सतयुग में तो शास्त्र होते ही नहीं। तुम बच्चों को तो वन्डर खाना चाहिए। बाप बिगर कोई भी यह बातें समझा न सके। यह बाप भी है टीचर भी है, सद्गुरु भी है। यह जो हमारा बाप है उनको कोई मां-बाप नहीं है। कोई कह न सके कि यह शिव बाबा किसका बच्चा है। यह बातें बुधि में घड़ी2 याद रहे तो यही मन्मनाभव है। टीचर पढ़ाते हैं। परन्तु खुद कहां से पढ़ा नहीं है। वह नालेज-फुल है। मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। चैतन्य है। ज्ञान का सागर है। चैतन्य होने कारण सभी कुछ समझाते हैं। कहते हैं बच्चों में जिस शरीर में प्रवेश किया हुआ हूं इन द्वारा मैं तुमको आदि से लेकर इस समय तक सभी राज़ समझाता हूं। अन्त के लिए तो फिर पीछे कहेंगे। उस समय तुम भी समझ जावेंगे अभी अन्त आता है। कर्मातीत अवस्था को भी नम्बरवार पहुंच जावेंगे। तुम असार भी देखेंगे। पुरानी सृष्टि का विनाश होना ही है। यह अनेक बार देखा है और देखते रहेंगे। पढ़ते ऐसे हैं जैसे कल्प पहले भी पढ़े थे। राज्य लिया, फिर गंवाया फिर अभी लेरहे हैं। बाप फिर से पढ़ा रहे हैं। कितना सहज है। तुम बच्चे समझते हो हम सच्च2 विश्व के मालिक थे। फिर बाबा आकर हमको वही ज्ञान दे रहे हैं। बाबा राय देते हैं ऐसे2 अन्दर में चलना चाहिए। बाबा हमारा बाबा भी है टीचर भी है। टीचर कोकब भूलेंगे क्या। टीचर द्वारा तो पढ़ाई पढ़ते रहते हैं ना। कोई2 बच्चों को माया बहुत ही गफ्लत कराती है। एकदम आंखों में जैसे कि धूर डाल देती है। पढ़ाई ही छोड़ देते हैं। माया इतनी गफ्लत में डाल देती है। पढ़ाई ही मुख्य है। सो भी कौन छोड़ते हैं? बाप के बच्चे। तुम बच्चों को अन्दर में कितनी खुशी रहनी चाहिए। बाबा नालेज भी हर बात की देते हैं। जो कल्प2 देते हैं। बाप कहते हैं कम से कम इस रीत भी मुझ बाप को तो याद करो। कल्प पहले भी तुम ही समझते हो और धारण करते हो। उनका बाबा तो कोई है नहीं। वही बेहद का बाप है। वन्डरफुल बात हुई ना। मेरा कोई बाबा है? बताओ। शिव बाबा किसका बच्चा है? बच्चे समझते हैं हम बेहद के बाप के बच्चे बने हैं। यह पढ़ाई भी वन्डरफुल है। जो इस समय के सिवाय कबपढ़ नहीं सकते। और सिर्फ तुम ब्राहमण ही पढ़ते हो। और यह भी जानते हो बाप को याद करते2 ही हम पावन बनेंगे। नहीं तो फिर सज़ा खानी पड़ेगी। गर्भ जेल में बहुत सजा खानी पड़ती

पड़ेंगे। गर्भ जेल में बहुत सज़ा खानी पड़ती है। वहां सभा बैठती है। सभी सा० करते हैं बिगर सा० तो किसको सजा दे नहीं सकते हैं। मुझे पड़े हमको यह सजा क्यों मिलती है। बाप को मालूम रहता है इसने यह पाप किया है। यह यह भूल की है। सभी सा० करते हैं। सा० बिगर सजा देना कायदे के बिरुद्ध है। उस समय ऐसा फील होता है। जैसे कि इतने सभी जन्मों की सजा मिलती है। तो जैसे कि सभी जन्मों की ईज्जत गई। तो बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों पुरुषार्थ अच्छी रीत करना है। भल स्वर्ग में तो सभी जावेंगे परन्तु सजा खाई तो फिर ऊंच पद पा न सकेंगे। श्रीमत पर पुरुषार्थ करना है। 16कला सम्पूर्ण बनने लिए याद की मेहनत करनी है। देखना है हम किसको दुःख तो नहीं देते। सुखदाता बाप के हम बच्चे हैं हम बच्चे हैं ना। बहुत गुल2 बनना है। यह पढ़ाई ही तुम्हारे साथ चलनी है। पढ़ाई से ही मनुष्य बैरिस्टर ईजीनियर आद बनते हैं। बाप की यह नालेज बिल्कुल ही न्यारी है। और बड़ी सस्ती भी है। और यह है पाण्डव गवर्मेन्ट इनकागनिटो। तुम्हारे सिवा दूसरा कोई समझ नहीं सकते। यह पढ़ाई भी वन्डर फुल है। आत्मा ही पढ़ती है। हमारी आत्मा सुनती है। आत्मा ही सुनाती है। बाप बार2 समझाते हैं पढ़ाई को कब छोड़ना नहीं। माया छूड़ा देती है। बाप कहते हैं ऐसे मत करो। पढ़ाई छोड़ो नहीं। बाबा के पास रिपोर्ट तो आते हैं ना। रजिस्टर से भी मालूम पड़ता है। यह कितना दिन गैरहाजिर रहा। एवरेज समझ जाते हैं। फलाना 12मास गैरहाजिर रहा। 2-3 वर्ष एपसेन्ट रहा। पढ़ाई छोड़ देते तो बाप को भी भूल जाते हैं। वास्तव मे यह भूलने की चीज़ तो है नहीं। यह तो वन्डर फुल बाप है। बाप जानते हैं यह (ब्रह्मा) ही 84 का चक्र खाने वाला है। तत त्वम। तुम भी इनके साथ रहते हो। समझते भी हैं ऐसे। जैसे कि एक खेल है। खेल की बात किसको भी सुनाने से झट याद रह जाती है। वह कब भूलते नहीं हैं। यह अपना अनुभव भी सुनाते हैं। छोटेपन में ही वैराग्य ख्यालात रहती थी। कहता था दुनिय में तो दुःख है। अभी हमारे पास सिर्फ 10हजार हो जावे तो फिर 50रु० ब्याज मिलेगा। इतना बस है। स्वतंत्र रहेंगे। घर-बार सम्भालना तो मूसीबत है। अच्छा फिर एक बायसकोप देखा सौभाग्य सुन्दरी का। बस। बस वैराग्य की सभी बातें टूट गई। ख्याल हुआ शादी करेंगे यह करेंगे। एक ही थप्पर लगा माया का काया कला चट कर दी। था तो गांवरे का छोड़ा। तो अभी बाप कहते हैं बच्चे अभी यह तो दुनिया ही नर्क है। और फिर उसमें भी यह जो नाटक है वह भी नर्क है। यह देखने से ही सभी वृतियां खराब हो जाती है। अखबारें पढ़ते हैं उन में अच्छे2 माईयों के चित्र दिखते हैं तो वृत्ति उस तरफ जाती है। यह बड़ी अच्छी खुबसुरत है। बुधि में आया ना। वास्तव मे यह ख्याल भी चलना न चाहिए। बाप कहते हैं यह तो दुनिया ही खत्म हो जानी है। इसलिए अभी तुम और सभी भूल मामेकं याद करो। ऐसे2 चित्र आद भी क्यों देखते हो। यह सभी बातें वृत्ति को नीचे ले जाती है। यह जो कुछ देखते हो यह तो सभी कब्रदाखिल होनी है। जो कुछ आंखों से देखते हो इनको याद न करो। इन सभी से ममत्व मिटा दो। यह सभी शरीर तो छीछी पुराना है। भल आत्मा शुध बनी है पर शरीर तो छीछी है। इन तरफ क्या ध्यान देना है। एक बाप को ही देखना है। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों मंजिल बहुत ऊंची है। विश्व का मालिक बननें लिए कब कोई ट्राय भी न करे। कोई की बुधि में भी न आये। माया का प्रभाव भी कोई कम नहीं है। सायंसवालों की कितनी बुधि चलती है। तुम्हारा फिर है सायलेन्स। सब चाहते हैं हम मुक्ति पावें। तुम्हारी फिर एम है जीवन मुक्ति की। यह भी बाप ने समझाया है। तुम्हारे सन्यासी गुरु लोग थे परन्तु वह भी नालेज दे न सके। विवेक भी कहते हैं वह कोई को समझा न सके। गृहस्थ में रह पवित्र बनना है। राजाई लेना है वह कह न सके। भक्ति में मनुष्य बहुत टाईम वेस्ट करते हैं। तुम भी समझते हो हमने कितनी भूलें की हैं। भूले करते2 बेसमझ बन पड़े हैं। यह है 100% बेसमझ। यह भी जानते हो यह लास्ट का जन्म 100% बेसमझ का ही है। बिल्कुल ही पत्थर बुधि बेसमझ बन पड़े हैं। अन्दर में आता है यह तो बड़ी वन्डरफुल नालेज है। जिससे हम क्या से क्या बन जाते हैं। पत्थर बुधि से पारस बुधि अभी तुम

समझते हो। खुशी का पारा भी चढ़ता है। हम सतोप्रधान से तमोप्रधान में कैसे आये फिर सतोप्रधान बनाने लिए बाबा कितनी युक्ति समझाते हैं। भल यहां बैठे हो। सिर्फ बुधि से बाप को याद करो। बाबा हमारा बेहद का बाबा है उनका कोई बाप नहीं। वह टीचर है उनका कोई टीचर नहीं। कहेंगे तब कहां से सीखा। वन्डर खावेंगे ना। बहुत लोग समझते हैं यह कोई गुरु से सीखा है। अगर गुरु से सीखा तो गुरु के और भी तो शिष्य होंगे। सिर्फ एक शिष्य था क्या। गुरुओं के शिष्य तो ढेर होते हैं। आगा खां के देखो कितने शिष्य हैं। गुरु के लिए कितना अन्दर में रहता है। उनको हीरों में वजन करते हैं। तुम ऐसे सद्गुरु को किसमें वजन करावेंगे। वह क्या करता था। कुछ भी नहीं। यह तो बेहद का सुप्रमी गुरु है। उनको (शिव बाबा) को तुम किस में वजन करेंगे। उनका वजन कितना है। एक हीरा भी नहीं डाल सको। बिल्कुल ही बिन्दी है। वह गुरुलोग तो बनाते कुछ भी नहीं हैं। और नीचे गिराते रहते हैं। अभी उनको तुम किसमें वजन करेंगे। वह बाप इतना ऊंच बनाते हैं तुमको। ऐसी2 बातें तुम बच्चों को विचार करनी है। यह तो बड़ी महीन बात हुई। भल यह तो सभी कहते रहते हैं हे ईश्वर, हे भगवन। परन्तु यह थोड़े ही समझते हैं कि वह बाप भी है टीचर भी है गुरु भी है। यह तो साधारण रीति बैठे हैं कि मुखड़ा देख सकें। बच्चों पर प्यार तो रहता है ना। इन मददगार बच्चों बिगर स्थापना थोड़े ही करेंगे। जास्ती मदद देने वाले को जरूर जास्ती प्यार करेंगे। कमाने वाला बच्चा अच्छा होगा तो जरूर उस पर प्यार भी जावेगा ना। वह बाप भी देखते हैं बच्चा बड़ा मददगार अच्छा है। यह जरूर ऊंच पद लेगा। बच्चों को देख2 हर्षित होते हैं। आत्मा बहुत खुश होती है। कल्प2 बच्चों को देख खुश होता हूं। कल्प2 यही बच्चे मददगार बनते हैं। बहुत ही प्यारे लगते हैं। कल्प-कल्पान्तर का प्यार जुट जाता है। भल कहां भी बैठे रहो बुधि में बाप ही याद रहे। यह बेहद का बाबा है। इनको कोई बाप नहीं। इनको कोई गुरु नहीं। स्वयं ही सब कुछ है। जिसको ही सभी याद करते हैं। सतयुग में तो कोई याद नहीं करेंगे। 2। जन्मों लिए बेरा पार हो जावेगा। तो तुम्हारे में कितनी खुशी होनी चाहिए। बस सारा दिन बाप की ही सर्विस करें। ऐसे बाप का परिचय दें। बाप से यह वरसा मिलता है। बाबा हमको राजयोग सिखलाते हैं। और फिर सभी को साथ भी ले जाते हैं। सारा चक्र भी बुधि में है। ऐसा चक्र तो कोई बना न सके। अर्थ का ही किसको पता नहीं। तुम अभी समझते हो हमारा बेहद का बाबा भी है-बेहद का टीचर भी है, बेहद का सद गुरु भी है। बेहद का राज्य देते हैं। फिर साथ ले जावेंगे। ऐसे2 तुम समझावेंगे तो फिर कोई सर्वव्यापी कह सकेंगे? वह बाप है टीचर है तो सर्वव्यापी कैसे हो सकता। ऐसे बाप टीचर गुरु को तुम कुत्ते बिल्ले ठिक्कर भित्तर में कह देते हो। तुम्हारी आत्मा की बुधि क्या हो पड़ी है। भल कोई भी हो। इसमें कब इनसल्ट नहीं समझेंगे। कुछ भी कहेंगे नहीं। तुमको तो यह बेहद का बाप समझाते हैं और कोई बता न सके। बेहद का बाप ही नालेज फुल है। सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। साथ ले जाने वाला भी है। उनको फिर सर्वव्यापी कुत्ते-बिल्ले में कह गालियां देते हो। इसलिए बाप कहते हैं विनाश काले विप्रीत बुधि। जो गालियां देते हैं वह विनश्यन्ति खत्म हो जावेंगे। विजय तो हम बच्चे ही प्राप्त करेंगे। ऐसे बाप के लिए तुम कहते हो ठिक्कर भित्तर में है। अपनी अनसल्ट-बाप की इनसल्ट सारी दुनिया की इनसल्ट करते हो।

बाप बच्चों को समझाते हैं पढ़ाई को भूलो मत। यह बहुत बड़ी पढ़ाई है। बाबा परम पिता है, परम शिक्षक है, परम गुरु भी है। इन सभी गुरुओं को भी ले जावेंगे। ऐसी2 वन्डर-फुल बातें सुनानी चाहिए। बोलो यह बेहद का खेल बना हुआ है। हरेक एक्टर को अपना पार्ट मिला हुआ है। बेहद के बाप से बेहद की बादशाही लेते हैं। हम ही मालिक थे। बैकुण्ठ होकर गया है फिर जरूर होगा। कृष्ण नई दुनिया का मालिक था। अभी पुरानी दुनिया है। फिर नई जरूर बनेगा। चित्र में भी क्लीयर है। तुम समझते हो अभी हमारी लात नर्क तरफ मुंह स्वर्ग तरफ है। वही याद रहती है। ऐसे याद करते2 अन्त मते सो गति हो जावेगी। कितनी अच्छी2 बातें हैं। उनका सिमरण करना चाहिए। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।